परस्तुतकत्री - डॉ० जागृति

हिन्दी विभाग ,रामदयालु सिंह

महाविद्यालय

मुजफ्फरपुर

पार्ट – 1 (M.I.L).

महादेवी वर्मा जी द्वारा रचित 'मंदिर- दीप' गीत का सारांश ।

श्री मती महादेवी वर्मा जी को कवयित्री के रूप में बहुत ही प्रसिद्धि मिली हैं। वे छायावाद युग की प्रतिनिधि कवियत्री हैं। इन्होंने अधिकतर गीतों की रचना की है। 'मन्दिर-दीप' महादेवी वर्मा जी प्रणीत है। यह रचना उनके गीत संग्रह 'दीप शिखा' में संकलित है। दीपशिखा का प्रकाशन 1942 में हुआ। इसमें 1936 से 1942 ई०तक के गीत है। इस संग्रह में 146 पृष्ठ हैं इस संग्रह के गीतों का मुख्य प्रतिपाद्य स्वंय मिटकर दूसरे को सुखी बनाना है। इस संग्रह की भूमिका में वे स्वंय कहती हैं- "दिप-

शिखा में मेरी कुछ ऐसी रचनाएँ संग्रहित हैं'जिन्हें मैंने रंगरेखा की धुंधली पृष्ठभूमि देने का प्रयास किया है। सभी रचनाओं को ऐसी पीठिका देना न सम्भव होता है और न रुचिकर, अतः रचनाक्रम की दृष्टि से यह चित्रगीत बहुत बिखरे हुए ही रहेंगे। और मेरे गीत अध्यात्म के अमूर्त आकाश के नीचे लोक-गीतों की धरती पर पले हैं। महादेवी के गीतों का आधिकारिक विषय प्रेम'है। पर प्रेम की साथर्कता उन्होंने मिलन के उल्लासपूर्ण क्षणों से अधिक विरह की अंतश्चेतना मूलक पीड़ा में तलाश की। मिलन के चित्र उनके चित्र उनके गीतों में आकांक्षित और संभावित, अतः कल्पनाश्रित ही हो सकते थे, पर विरहानुभूति को भी उन्होंने सूक्ष्म, निगूढ़ प्रतीकों और धुँधलों बिंबो के माध्यम से ही अधिक अंकित किया। उनके प्रतीकों का विश्लेषण करते हुए अज्ञेय ने कहा:' उन्हें तो वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति भी देनी थी और सामाजिक शिष्टाचार तथा रूढ़ बन्धनों की मर्यादा भी निभानी थी। यही भाव उन्हें प्रतीकों का आश्रय लेने पर

बाध्य करता है। महादेवी के गीतों में ऐसे बिम्बों की बहुतायत है जो दृश्यरूप या चित्र खड़े करने की बजाय सूक्ष्म संवेदना अधिक जगाते हैं,

“रजत रशिमयो की छाया में धूमिल घन- सा वह आता”

जैसी पंक्तियों में ‘ वह ‘ को प्रकट करने की अपेक्षा धुंधलाने का प्रयास अधिक दिखाई देता है। दीप महादेवी जी का प्रिय प्रतीक है। कविता में दीपक को साधनारत आत्मा का प्रतीक मानती हैं उनके कुछ अत्यंत लोक प्रिय गीत भी शामिल हैं जैसे-दीप मेरे जल अकंपित धूल अचंचल, सब बुझे दीपक जला लूँ, किसी का दीप निष्ठुर हूँ मधुर-मधुर मेरे दीपक जल,क्या न तुमने दीप बाला, जब यह दीप थके तब आना, धूप सा तन दीप सी मैं और यह मंदिर दीप इत्यादि इन सारे दीपगीतों को एक जगह देखना निश्चय ही आनन्द दायक है।

दीपक के प्रति अपने अनुराग का कारण बताते हुए वे कहती हैं- “भारत के कला अलंकार,आस्था,ज्ञान, सौंदर्य,बोध,साहित्य आदि में दीपक का प्रतीक विशेष

महत्व रखता है। मेरे निकट भी वह प्रतीक इतना आवश्यक है कि मैं उसके माध्यम से बुद्धि और हृदय दोनों की बात सहज ही कह सकती हूं। इन गीतों के संदर्भ में कवयित्री ने कहा-"दीपशिखा" में अविश्वास का कोई कम्पन नहीं है। नवीन प्रभात के वैतालिकों के स्वर के साथ इसका स्थान रहे, ऐसी कामना नहीं, पर रात की सघनता को इसकी लों झेल सके यह इच्छा स्वाभाविक रहेगी "दीप"कवयित्री के मन का प्रतीक है। महादेवी का दीप आनन्द के क्षणों में अंधकार से प्रकाश को और अनुबंधित होने की प्रेरणा देता है। यह आनन्द और उल्लास का भी प्रतीक है। साथ ही अपने प्रभु के लिए पूर्ण समर्पण का भाव भी रखता है। कवयित्री अपने आप को मिटाकर दूसरे के कष्टों को दूर करने के लिए सतत जलने की कामना रखती है। इस जलने में उसे असीम आनन्द मिलता है। जलने का मिटने का भाव करुणा का भाव या अज्ञात प्रिय की स्वीकृति का भाव मन्दिर का दीप हमें अपने इष्टदेव की ओर उन्मुख भी नहीं करता है।

महादेवी की यह पूरी कविता मंदिर के वातावरण के साथ-साथ दीपक के जलने की प्रतीक्षा के साथ पूरी होती है। कवियत्री ने यहां विशद भावों की अभिव्यक्ति के साथ कहा है। कि यह दीप मंदिर का है, इसे नीरव भाव से जलने दो। इष्टदेव की आराधना के समय, आरती की बेला में सौं-सौं लयों से शँख एवं स्वर्ण वंशी-विणा के स्वर मन्दिर वातावरण को पवित्रता से भर देते हैं। चारों दिशाओं का वातावरण पवित्र बन जाता है। कवियत्री के कहने का आशय है। कि जब तक रात्रि रहेगी विरह की अवस्था रहेगी, और इस प्राण-दीपक को सैदेव जलने की आवश्यकता नहीं होगी

प्रस्तुत गीत में महादेवी जी ने प्राण को मंदिर में जलने वाले दीप के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहां रहस्य साधना की अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने कहा है कि पूजा की वास्तविकता मन की एकाग्रता एवं लगन पर निर्भर है। कबीर ने कहा है, "प्रत्येक घर में दीपक जलता है,

अर्थात प्रत्येक प्राणी के भीतर भगवान की ज्योति है, देखने का अभ्यास करने से वह दिखाई देता है।“

घर-घर दीपक बरै, लखै नहि अंध है, लखत-लखत लखि परै, करै जम फन्द है।

प्रस्तुत गीत महादेवी को एक सफल गीतकार सिद्ध करता है महादेवी जी को जैसी सफलता गीत लिखने में हुई किसी को नही महादेवी जी ‘मन्दिर-दीप के माध्यम से यह बताना चाहती है। मन्दिर में दीप अज्ञात होकर जलती उसी प्रकार महादेवी जी उस अज्ञात प्रियतम के लिए वेदना ही उनके हृदय का भाव केन्द्र है। जिससे अनेक प्रकार की भावनाएं कूट-कूट कर झलक मारती रहती हैं।